[This question paper contains 4 printed pages.]

Your Roll No..............

Sr. No. of Question Paper : 571 **G**

Unique Paper Code : 2052102302

Name of the Paper : Hindi Natak Evam Ekanki
हिन्दी नाटक एवं एकांकी

Name of the Course : **B.A. (Hons.) Hindi**

Semester : III

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 90

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।

2. सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. निम्नलिखित गद्यांशों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए- (10×3=30)

(क) कोऊ नहीं पकरत मेरो हाथ।
बीस कोटि सुत होत फिरत मैं हा हा होय अनाथ।।
जाकी सरन गहत सोइ भारत सुनत न कोउ दुखगाथ।।
दीन बन्यौ इत सों उत डोलत टकरावत निज माथ।
दिन-दिन बिपति बढ़त सुख छीजत देत कोऊ नहिं साथ।
सब बिधि दुख सागर में डूबत धाइ उबारौ नाथ।।

P.T.O.

KALINDI COLLEGE LIBRARY

अथवा

फूट बैर और कलह बुलाऊं, ल्याऊँ सुस्ती जोर।
घर-घर में आलस फैलाऊँ, छाऊँ दुख घनघोर।। मुझे...
काफिर काला नीच पुकारूँ, तोडूँ पैर और हाथ।
दूँ इनको संतोष खुशामद, कायरता भी साथ।। मुझे...
मरी बुलाऊँ देस उजाड़ूँ, महँगा करके अन्न।
सबके ऊपर टिकस लगाउँ, धन है मुझको धन्न।।
मुझे तुम सहज न जानो जी, मुझे इक राक्षस मानो जी।।

(ख) मेरी रक्षा करो। मेरे और अपने गौरव की रक्षा करो। राजा, आज मैं शरण की प्रार्थिनी हूँ। मैं स्वीकार करती हूँ, कि आज तक मैं तुम्हारे विलास की सहचरी नहीं हुई, किन्तु वह मेरा अहंकार चूर्ण हो गया है। मैं तुम्हारी होकर रहूँगी। राज्य और सम्पत्ति रहने पर राजा को, पुरुष को बहुत-सी रानियाँ और स्त्रियाँ मिलती हैं, किन्तु व्यक्ति का मान नष्ट होने पर फिर नहीं मिलता।

अथवा

विवाह की विधि ने देवी ध्रुवस्वामिनी और रामगुप्त को एक भ्रान्तिपूर्ण बन्धन में बाँध दिया है। धर्म का उद्देश्य इस तरह पद दलित नहीं किया जा सकता। माता और पिता के प्रमाण के कारण से धर्म-विवाह केवल परस्पर द्वेष से टूट नहीं सकते; परन्तु यह सम्बन्ध उस प्रमाणों से भी विहीन है। और भी (रामगुप्त

KALINDI COLLEGE LIBRARY

को देखकर) यह रामगुप्त मृत और प्रव्रजित तो नहीं, पर गौरव से नष्ट, आचरण से पतित और कर्मों से राजकिल्विषी क्लीव है। ऐसी अवस्था में रामगुप्त का ध्रुवस्वामिनी पर कोई अधिकार नहीं।

(ग) सोते में विकराल हाथों की लौह-जकड़ और जागते में यमवाहन की चीत्कार-सा वंशीरव। यह कैसी यातना है- न सोते चौन, न जागते शान्ति। जीते हुए मृत्यु और मृत्युमय जीवन। सोने और जागने का अन्तर मिट गया। जीवन और मृत्यु की अन्तर्रेखा धुँधली पड़ती जा रही है। और धुँधल के में रूप ले रहे हैं- कुछ प्रश्न। मूर्तिमान प्रश्न-क्या हर अत्याचार आत्मयंत्रण है? क्यों हर हत्या आत्महत्या है?

अथवा

यदि मैं बचपन ही से ऐसे वातावरण में पली हूँ जहाँ सफाई और सलीके का बेहद ख्याल रखा जाता है तो इसमें मेरा क्या दोष? वे सफल और व्यवस्था की मेरी इच्छा को घृणा बताते हैं। मैं बहुतेरा यत्न करती हूँ कि इस सब सफाई-वफाई को छोड़ दूँ, इन तकल्लुफात को तिलांजलि दे दूँ, पर अपने इस प्रयास में कभी-कभी मुझे अपने आपसे घृणा होने लगती है। बचपन से जो संस्कार मैंने पाये हैं उनसे मुक्ति पाना मेरे लिए उतना आसान नहीं। पर नहीं। मैं इन सब बहमों को छोड़ दूँगी। पुरानी आदतों से छुटकारा पा लूँगी। वे समझते हैं, मैं उनसे नफरत करती हूँ।

KALINDI COLLEGE LIBRARY

2. 'भारत दुर्दशा' नाटक के आधार पर भारतेन्दुयुगीन परिस्थितियों पर प्रकाश डालिए? (15)

अथवा

रंगमंच की दृष्टि से 'भारत दुर्दशा' नाटक की समीक्षा कीजिए?

3. "'ध्रुवस्वामिनी' एक स्त्री विमर्श का नाटक है" -- इस कथन की पुष्टि कीजिए? (15)

अथवा

'ध्रुवस्वामिनी' नाटक के आधार पर चन्द्रगुप्त की चारित्रिक विशेषताओं का विवेचन कीजिए?

4. 'कथा एक कंस की' नाटक के उद्देश्य पर प्रकाश डालिए? (15)

अथवा

"'कथा एक कंस की' मंचन की दृष्टि से सफल नाट्य कृति है"- इस कथन की समीक्षा कीजिए?

5. 'उत्सर्ग' एकांकी के शीर्षक की सार्थकता पर प्रकाश डालिए? (15)

अथवा

'तौलिये' एकांकी की तात्विक समीक्षा कीजिए?

(4500)

KALINDI COLLEGE LIBRARY

[This question paper contains 4 printed pages.]

Your Roll No..............

Sr. No. of Question Paper : 5465 G

Unique Paper Code : 12051303

Name of the Paper : Hindi Kahani

Name of the Course : B.A. (H) Hindi

Semester : III

समय : 3 घण्टे पूर्णांक : 75

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।
2. सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. 'उसने कहा था' कहानी के आधार पर लहना सिंह का चरित्र-चित्रण कीजिए। (12)

अथवा

'पूस की रात' कहानी की मूल संवेदना पर प्रकाश डालिए।

2. 'तीसरी कसम' कहानी का प्रतिपाद्य लिखिए। (12)

P.T.O.

KALINDI COLLEGE LIBRARY

5465

अथवा

'चीफ की दावत' कहानी की भाषा-शैली पर प्रकाश डालिए।

3. शिल्प की दृष्टि से 'सिक्का बदल गया' कहानी की समीक्षा कीजिए। (12)

अथवा

'वापसी' कहानी के शीर्षक की सार्थकता पर प्रकाश डालिए।

4. 'जंगल जातकम्' कहानी की प्रतीकात्मकता स्पष्ट कीजिए। (12)

अथवा

'घुसपैठिये' कहानी की मूल संवेदना पर प्रकाश डालिए।

(9×3=27)

5. सप्रसंग व्याख्या कीजिए :

(क) "चार दिन तक पलक नहीं झँपी। बिना फेरे घोड़ा बिगड़ता है और बिना लड़े सिपाही। मुझे तो संगीन चढ़ाकर मार्च का हुक्म मिल जाए। फिर सात जरमनों को अकेला मारकर न लौटूँ तो मुझे दरबार साहब की देहली पर मत्था टेकना नसीब न हो। पाजी कहीं के, कलों के घोड़े संगीन देखते ही मुँह फाड़ देते हैं और पैर पकड़ने लगते हैं। यो अंधेरे में तीस-तीस मन का गोला फेंकते हैं।

KALINDI COLLEGE LIBRARY

अथवा

दस बज चुका था। मैंने देखा कि उस निर्मल धूप में सड़क के किनारे एक कपड़े पर छोटे जादूगर का रंगमंच सजा था। मोटर रोककर उतर पड़ा। वहाँ बिल्ली रुठ रही थी। भालू मनाने चला था। ब्याह की तैयारी थीय यह सब होते हुए भी जादूगर की वाणी में वह प्रसन्नता की तरी नहीं थी। जब वह औरों को हँसाने की चेष्टा कर रहा था। तब जैसे स्वयं काँप जाता था। मानो उसके रोएँ रो रहे थे।

(ख) मैं कुछ बोला नहीं मेरा मन जाने कैसे गंभीर प्रेम के भाव से आशुतोष के प्रति उमड़ पड़ा था। मुझे ऐसा मालूम होता था कि ठीक इस समय आशुतोष को हमें अपनी सहानुभूति से वंचित नहीं करना चाहिए। बल्कि कुछ अतिरिक्त स्नेह इस समय बालक को मिलना चाहिए। मुझे यह एक भारी दुर्घटना मालूम होती थी। मालूम होता था कि अगर आशुतोष ने चोरी की है तो उसका इतना दोष नहीं है; बल्कि यह हमारे ऊपर बड़ा भारी इल्जाम है। बच्चे में चोरी की आदत भयावह हो सकती है।

अथवा

हीराबाई ने हिरामन के जैसा निश्छल आदमी बहुत कम देखा है। पूछा, 'आपका घर कौन जिल्ला में पड़ता है?' कानपुर नाम सुनते ही जो उसकी हँसी छूटी, तो बैल भड़क उठे। हिरामन

KALINDI COLLEGE LIBRARY

हँसते समय सिर नीचा कर लेता है।। हँसी बंद होने पर उसने कहा, "वाह रे कानपुर! तब तो नरकपुर भी होगा?" और जब हीराबाई ने कहा कि नरकपुर भी है, तो वह हँसते-हँसते दुहरा हो गया।

(ग) शाहनी चौंक पड़ी। देर-मेर घर में मुझे देर! आँसुओं को भँवर में न जाने कहाँ से विद्रोह उमड़ पड़ा। मैं पुरखों के इस बड़े घर की रानी और यह मेरे ही अन्न पर पले हुए... नहीं, यह सब कुछ नहीं। ठीक है-देर हो रही है, देर हो रही है। शाहनी के कानों में यही गूंज रहा है। देर हो रही है-पर नहीं, शाहनी रो-रोकर नहीं, शान से निकलेगी इस पुरखों के घर से, मान से लाँघेगी यह देहरी, जिस पर एक दिन वह रानी बनकर आ खड़ी हुई थी।

अथवा

सिद्धेश्वरी की समझ में नहीं आ रहा था कि उसके दिल में क्या हो गया है-जैसे कुछ काट रहा हो। पंखे को जरा और जोर से घुमाती हुई बोली, "अभी-अभी खाकर काम पर गया है। कह रहा था कि कुछ दिनों में नौकरी लग जाएगी। हमेशा 'बाबूजी-बाबूजी' किए रहता है। बोला-बाबूजी देवता के समान हैं।"

(2000)

KALINDI COLLEGE LIBRARY

(3).

Sl. No. of Q.P. : 542

Unique paper code : 2052101101   अनुक्रमांक :
Name of the paper : Hindi Kavita Aadikal Evam Nirgunbhakti
Name of course : B.A.(Hons) Hindi
Type of Paper : DSE-I
Semester : I
Maximum Marks : 90   Time : 3 Hours

छात्रों के लिए निर्देश:

1. इस प्रश्न पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए ।
2. सभी प्रश्न अनिवार्यहैं।

1. निम्नलिखित पद्यांशो की सप्रसंग व्याख्या कीजिए: (9x3=27)

(क) भयौ एक फुरमान । बान जोगिनिपुर संध्यौ॥
सोइ सबद अरु बान । अग्र अबिचल कर बंध्यौ ॥
भयौ बियौ फुरमान । तानि रष्यौ श्रवनंतरि ॥
तियौ भयौ अनभयौ । हर्‌या पतिसाही धरंतरि ॥
लै दसन रसन तालु असघन । सीस फट्टि दह दिसि गवन॥
सुरतान पर्‌यो षां पुक्कारै । भयौ चंद राजन मरन ॥

अथवा

नन्दक नन्दन कदम्बेरि तरुतरे धिरे-धिरे टरलि बोलाब।
समय संकेत निकेतन बइसल बेरि बेरि बोलि पठाव ॥
सामरी तोहरा लागि अनुखने बिकल मुरारि ।।
जमुनाक तिर उपवन उदबेगल फिरि फिरि ततहि निहारि ॥
गौरस बिके निके अबइते जाइते जनि जनि पुंछ बनवारि ।।
तोंहे मतिमान सुमति मधुसूदन वचन सुनह किछु मोरा ।।
भनइ विद्यापति सुन बरजौवति बेन्दह नन्दकिसोरा॥

(ख) इस तन का दीवा करौं, बाती मेल्यूँ जीव।
लोही सीचौं तेल ज्यूं, कब मुखु देखौं पीव।।
सुखिया सब संसार है, खाये अरु सोवै।
दुखिया दास कबीर है, जागे अरु रोवै।

अथवा

मेरी हार हिरांनौं मैं लजाऊ, सास दुरासनि पीव डराऊँ ॥
हार गुह्यौर मेरो राम ताग, विचि विचि मान्यक एक लाग॥
रतन प्रवालै परम जोति, ता अंतरि अंतरि लागे मोति ॥
पंच सखी मिलिहै सुजान, चलहु त जईये त्रिवेणी न्हान ।
न्हाइ धोइ कै तिलक दीन्ह, नां जानूं हार किनहूं लीन्ह ॥
हार हिरांनी जन बिमल कीन्ह, मेरौ आहि परोसनि हार लीन्ह ॥
तिनि लोक की जानैं पीर, सब देव सिरोमनि कहै कवीर ॥

KALINDI COLLEGE LIBRARY

(ग) मिलहिं रहसि सब चढ़हिं हिँडोरी। झूलि लेहिं सुख बारी भोरी ॥
झूलि लेहु नैहर जब ताईं। फिरि नहिं झूलन देइहिं साईं ॥
पुनि सासुर लेइ राखिहि तहाँ। नैहर चाह न पाउब जहाँ ॥
कित यह धूप, कहाँ यह छाहाँ। रहब सखी बिनु मंदिर माहाँ ॥
गुन पूछिहि और लाइहि दोखू। कौन उतर पाउब तहँ मोखू ॥
सास ननद के भौंह सिकोरे। रहब सँकोचि दुवौ कर जोरे ॥
कित यह रहसि जो आउब करना। ससुरेइ अंत जनम दुख भरना ॥
कित नैहर पुनि आउब, कित ससुरे यह खेल ॥
आपु आपु कहँ होइहि, परब पंखि जस डेल ॥

अथवा

सखी एक तेइ खेल न जाना। भै अचेत मनिहार गवाँना ॥
कवल डार गहि भै बेकरारा। कासों पुकारौं आपन हारा॥
कित खेलै आइउँ एहि साथा। हार गँवाइ चलिउँ लेइ हाथा ॥
घर पैठत पूँछब यह हारू। कौन उतर पाउब पैसारू॥
नैन सीप आँसू तस भरे। जानौ मोति गिरहिं सब ढरे॥
सखिन कहा बौरी कोकिला। कौन पानि जेहि पौन न मिला ? ॥
हार गँवाइ सो ऐसे रोवा। हेरि हेराइ लेइ जौ खोवा ॥
लागीं सब मिलि हेरै, बूड़ि बूड़ि एक साथ।
कोइ उठी मोती लेइ, काहू घोंघा हाथ ॥

2. 'बानबेघ समय' के आधार पर चंदबरदाई की काव्यभाषा पर प्रकाश डालिए।

अथवा

'बानबेघ समय' की रस-योजना की समीक्षा कीजिए। (14)

3. विद्यापति के काव्य-सौंदर्य का विश्लेषण कीजिए।

अथवा

विद्यापति की गीति योजना पर विचार कीजिए। (14)

4. कबीर की भक्ति-भावना का विवेचन कीजिए।

अथवा

कबीर काव्य के आधार पर गुरु की महत्ता पर प्रकाश डालिए। (14)

5. जायसी की काव्य भाषा पर प्रकाश डालिए।

अथवा

मानसरोदक खंड की अलौकिकता पर प्रकाश डालिए। (14)

6. किसी एक विषय पर टिप्पणी लिखिए। (7)

(क) बानबेघ समय का प्रतिपाद्य
(ख) कबीर की काव्य भाषा
(ग) विद्यापति की प्रेम भावना

KALINDI COLLEGE LIBRARY

(5)

[This question paper contains 2 printed pages.]

Your Roll No..............

G

Sr. No. of Question Paper : 542

Unique Paper Code : 2052101102

Name of the Paper : Hindi Sahitya ka Itihas (Adikal Evam Madhyakal)

Name of the Course : B.A. (Hons.) Hindi (DSC-2)

Semester : I

Duration : 3 Hours

Maximum Marks : 90

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।

2. सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. हिंदी साहित्य के इतिहास में नामकरण की समस्या पर प्रकाश डालिए। (15)

अथवा

हिन्दी-साहित्येतिहास-लेखन की परम्परा का परिचय दीजिए।

P.T.O.

KALINDI COLLEGE LIBRARY

2. आदिकाल के नामकरण की सार्थकता पर विचार कीजिए। (15)

अथवा

आदिकाल के राजनीतिक, सामाजिक व सांस्कृतिक परिवेश का वर्णन कीजिए।

3. ज्ञानाश्रयी काव्यधारा की प्रवृत्तियों का विश्लेषण कीजिए। (15)

अथवा

भक्ति आंदोलन और उसके अखिल भारतीय स्वरूप को स्पष्ट कीजिए।

4. रीतिकाव्य की प्रमुख विशेषताओं का उल्लेख कीजिए। (15)

अथवा

रीतिमुक्त और रीतिबद्ध काव्यधारा का तुलनात्मक विवेचन कीजिए।

5. निम्नलिखित में से किन्हीं **तीन** पर टिप्पणियाँ लिखिए : (10+10+10=30)

(क) रासोकाव्य

(ख) नाथ-साहित्य

(ग) जैन-साहित्य

(घ) राम काव्यधारा

(ङ) रीतिसिद्ध काव्य

(4000)

KALINDI COLLEGE LIBRARY

(5)

[This question paper contains 4 printed pages.]

Your Roll No..............

Sr. No. of Question Paper : 618 **G**

Unique Paper Code : 2052101103

Name of the Paper : Hindi Kahani (DSC-3)

Name of the Course : **B.A. (HONS.) Hindi**

Semester : I

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 90

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।

2. सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. निम्नलिखित में से किन्हीं 'दो' की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : (10+10=20)

(क) "राम-राम यह भी कोई लड़ाई है। दिन रात खंदकों में बैठे हड्डियां अकड़ गईं। लुधियाने से दस गुना जाड़ा। और मेह और बरफ ऊपर से। पिंडलियों तक कीचड़ में धंसे हुए हैं। गनीम कहीं दिखता नहीं, घंटे दो घंटे में कान के पर्दे फाड़ने वाले

P.T.O.

KALINDI COLLEGE LIBRARY

धमाके के साथ सारी खंदक हिल जाती है और सौ-सौ गज धरती उछल पड़ती है। इस गैबी गोले से बचे तो कोई लड़े। नगरकोट का जलजला सुना था। यहाँ दिन में पच्चीस जलजले होते हैं। जो कहीं खंदक से बाहर साफ या कुहनी निकल गई तो चटाक से गोली लगती है। न मालूम बेईमान मिट्टी में लेटे हुए या घास की पत्तियों में छिपे रहते हैं।"

(ख) पत्र-संपादक अपनी शांति कुटी में बैठा हुआ कितनी धृष्टता और स्वतंत्रता के साथ अपनी प्रबल लेखनी से मंत्रिमंडल पर आक्रमण करता है। परन्तु ऐसे अवसर आते हैं, जब वह स्वयं मंत्रिमंडल में सम्मिल्नित होता है। मंडल के भवन में पग धरते ही उसकी लेखनी कितनी मर्मज्ञ, कितनी विचारशील, कितनी न्याय-परायण हो जाती है। इसका कारण उत्तरदायित्व का ज्ञान हैद्य नवयुवक युवावस्था में कितना उद्दण्ड रहता है। माता-पिता उसकी ओर से कितने चिंतित रहते हैं। वे उसे कुल-कलंक समझते हैं; परन्तु थोड़े ही समय में परिवार का बोझ सिर पर पड़ते ही वह अव्यवस्थित- चित्त उन्मत्त युवक कितना धैर्यशील, कैसा शांतचित्त हो जाता है। यह भी उत्तरदायित्व के ज्ञान का फल है।'

(ग) शामनाथ सिगरेट मुहं में रखे सिकुड़ी आँखों से श्रीमती के चेहरे की ओर देखते हुए पत्र-भर सोचते रहे, फिर सिर हिलाकर बोले, "नहीं मैं नहीं चाहता कि उस बुढियां का यहाँ आना-जाना फिर

KALINDI COLLEGE LIBRARY

से शुरू हो। पहले ही बड़ी मुश्किल से बंद किया था। माँ से कहें कि जल्दी से खाना खा के शाम को अपनी कोठरी में चली जाएँ। मेहमान कहीं आठ बजे आएँगे, इससे पहले ही अपने काम से निबट लें।

(घ) रमेश चौधरी से फोन पर यह समाचार पाकर राकेश भी गहरे अवसाद से भर गया था। उसे विश्वास ही नहीं हों रहा था कि इतनी कुशाग्र बुद्धि का सोनकर आत्महत्या कर सकता है। फोन पर रमेश की आक्रोशित आवाज सुन कर राकेश की उलझने और ज़्यादा बढ़ गई थी। उसके काँपते हाथ में थमा फोन भी थरथरा गया था। बहुत मुश्किल से राकेश फोन क्रेडिल पर रख पाया था... राकेश ने स्वयं को संभालने का प्रयास किया। फिर भी उसे लग रहा था जैसे उसका हृदय डूब रहा है। वह धम्म से कुर्सी में धंस गया। उसके मुहं से अस्फुट शब्द निकले, "सोनकर यह क्यों किया तुमने...!"

2. कहानी के तत्वों के आधार पर 'उसने कहा था' कहानी का विश्लेषण कीजिए। (17)

अथवा

'पंच-परमेश्वर' कहानी के शीर्षक की सार्थकता पर विचार कीजिए।

3. 'तीसरी कसम' कहानी में निहित मूल संवेदना की विवेचना कीजिए। (17)

KALINDI COLLEGE LIBRARY

अथवा

'चीफ की दावत' कहानी आधुनिक सामाजिक मूल्यों में संक्रमण से उपजी मानसिकता की कहानी है।' स्पष्ट कीजिए।

4. 'वारिस कहानी' के आधार पर 'मास्टर जी' का चरित्र-चित्रण कीजिए। (16)

अथवा

'वापसी कहानी' के कथ्य को उद्घाटित कीजिए। (10+10=20)

5. निम्नलिखित में से किन्हीं दो पर टिप्पणी लिखिए :

(क) 'जुम्मन शेख' का चरित्र-चित्रण

(ख) 'तीसरी कसम' कहानी की भाषा-शैली

(ग) 'दोपहर का भोजन' कहानी का सार

(घ) 'घुसपैठिए' कहानी का शिल्प

(5000)

KALINDI COLLEGE LIBRARY

[This question paper contains 4 printed pages.]

Your Roll No..............

Sr. No. of Question Paper : 5255 G

Unique Paper Code : 12051502

Name of the Paper : हिन्दी नाटक, एकांकी

Name of the Course : B.A. (H) Hindi

Semester : V

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 75

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए ।

2. **सभी** प्रश्न अनिवार्य हैं ।

1. निम्नलिखित की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : (9×3=27)

(क) रोअहु सब मिलिकै आवहु भारत भाई ।

हा ! हा ! भारत-दुर्दशा न देखी जाई ।।

सबके पहिले जेहि ईश्वर धन बल दीनो

सबके पहिले जेहि सभ्य विधाता कीनो ।

P.T.O.

KALINDI COLLEGE LIBRARY

अथवा

भारतकिरिन जगत् उँजियारा ।

भारतजीव जिअत संसारा ।।

भारत वेदकथा इतिहास ।

भारत वेद प्रथा परकासा ।।

(ख) यह कसक अरे आंसू सह जा ।

बनकर विनम्र अभिमान मुझे

मेरा अस्तित्व बता, रह जा ।

बन प्रेम छलक कोने-कोने

अपनी नीरव गाथा कह जा

करुणा बन दुखिया वसुधा पर

शीतलता फैलाता बह जा ।

अथवा

रानी, तुम भी स्त्री हो। क्या स्त्री की व्यथा न समझोगी? आज तुम्हारी विजय का अंधकार तुम्हारे शाश्वत स्त्रीत्व को ढक ले, किन्तु सबके जीवन में एक बार प्रेम की दीपावली जलती है।

KALINDI COLLEGE LIBRARY

जली होगी अवश्य। तुम्हारे जीवन में वह आलोक का महोत्सव आया होगा, जिसमें हृदय, हृदय को पहचानने का प्रयत्न करता है, उदार बनता है और सर्वस्व दान करने का उत्साह रखता है। मुझे शकराज का शव चाहिए।

(ग) बकरी को क्या पता था
मरकर बन के रहेगी,
पानी भरेंगे लोग
और वह कुछ न कहेगी,
जा-जा के सींच आएगी
हर एक की क्यारी,
मर कर के भी बुझाएगी
वह प्यास तुम्हारी।

अथवा

तब मैं स्वयं तलवार लेकर कुँवर की रक्षा करूँगी। भैरवी बनकर युद्ध करूँगी। मरते-मरते मैं उसकी तलवार के टुकड़े-टुकड़े कर दूँगी। उसके और मेरे कुँवर के बीच में मेरे खून का समुद्र लहराएगा जिसे वह इस जीवन में पार भी न कर सकेगा।

P.T.O.

KALINDI COLLEGE LIBRARY

2. 'भारत-दुर्दशा' नाटक का प्रतिपाद्य लिखिए। (12)

अथवा

'भारत-दुर्दशा' नाटक की भाषा-शैली पर प्रकाश डालिए।

3. 'ध्रुवस्वामिनी' नाटक की मूल संवेदना पर प्रकाश डालिए। (12)

अथवा

नाटक के तत्त्वों के आधार पर ध्रुवस्वामिनी की समीक्षा कीजिए।

4. 'बकरी' नाटक में निहित व्यंग्य स्पष्ट कीजिए। (12)

अथवा

'बकरी' नाटक की मूल संवेदना पर प्रकाश डालिए।

5. 'सूखी डाली' का प्रतिपाद्य लिखिए। (12)

अथवा

एकांकी के तत्त्वों के आधार पर 'तीन अपाहिज' की समीक्षा कीजिए।

KALINDI COLLEGE LIBRARY

[This question paper contains 4 printed pages.]

Your Roll No..............

Sr. No. of Question Paper : 5364 **G**

Unique Paper Code : 12057502

Name of the Paper : Hindi Bhasha Ka Vyavaharik Vyakaran

Name of the Course : **B.A. (Hons.) Hindi**

Semester : V

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 75

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।

2. सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. भाषा की प्रमुख विशेषताओं का वर्णन कीजिए। (12)

अथवा

हिन्दी स्वरों का वर्गीकरण कीजिए।

P.T.O.

KALINDI COLLEGE LIBRARY

2. शब्द की परिभाषा देते हुए रचना के आधार पर शब्दों के भेद लिखिए। (12)

अथवा

हिन्दी के अविकारी शब्दों का परिचय देते हुए उनके भेद लिखिए।

3. संज्ञा शब्दों की रूप-रचना का विवेचन कीजिए। (12)

अथवा

पद के स्वरूप पर प्रकाश डालते हुए शब्द और पद का अंतर स्पष्ट कीजिए।

4. अर्थ के आधार पर वाक्य के भेद उदाहरण सहित लिखिए। (12)

अथवा

वाक्यगत अशुद्धियों के विभिन्न रूपों का वर्णन कीजिए।

5. (क) किन्हीं **चार** शब्दों के शुद्ध रूप लिखिए : (2)

संतुलीत, धर्मचार्य, शरणार्थि, अविष्कार, व्यावस्थित, अविभकत, अनवेषण, अभीव्यक्ति

KALINDI COLLEGE LIBRARY

(ख) निर् और अनु उपसर्ग से बनने वाले **दो–दो** शब्द लिखिए। (2)

(ग) तम और ईय प्रत्यय से बनने वाले **दो–दो** शब्द लिखिए। (2)

(घ) किन्हीं **चार** शब्दों का संधि-विच्छेद कीजिए : (2)

महर्षि, इत्यादि, सर्वाधिक, गिरीश, नरेन्द्र, परोपकार, उत्तरोत्तर, भारतेन्दु

(ङ) किन्हीं **चार** समस्त पदों का विग्रह कर समास का नाम लिखिए : (2)

यथासंभव, पंचवटी, चरण-कमल, तुलसीकृत, सुख-दुख, चक्रधर, चतुर्भुज, दानवीर

(च) किन्हीं **चार** शब्दों से भाववाचक संज्ञा वनाइए : (2)

निज, वीर, लघु, नवीन, बंधु, हरा, सर्व, पढ़ना

6. टिप्पणी लिखिए :

(क) हिन्दी की मात्राएं अथवा सर्वनाम के भेद (8)

KALINDI COLLEGE LIBRARY

(ख) व्याकरण का महत्त्व अथवा संयुक्त वाक्य (7)

(1000)

KALINDI COLLEGE LIBRARY

[This question paper contains 4 printed pages.]

Your Roll No...............

Sr. No. of Question Paper : 5528 **G**

Unique Paper Code : 12057502

Name of the Paper : Hindi Bhasha Ka Vyavaharik Vyakaran

Name of the Course : **B.A. (Hons) Hindi**

Semester : V

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 75

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए ।
2. सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. भाषा को परिभाषित करते हुए उसकी मुख्य विशेषताओं का उल्लेख कीजिए । (12)

अथवा

हिन्दी व्यंजनों का वर्गीकरण कीजिए।

P.T.O.

KALINDI COLLEGE LIBRARY

2. शब्द की परिभाषा देते हुए स्रोत के आधार पर उसके भेदों का वर्णन कीजिए। (12)

अथवा

सर्वनाम को परिभाषित करते हुए उसके भेदों का सोदाहरण वर्णन कीजिए । (12)

3. पद के स्वरूप की सविस्तार चर्चा कीजिए । (12)

अथवा

संज्ञा के कारकीय रूपों का वर्णन कीजिए।

4. वाक्य की परिभाषा देते हुए वाक्य के अंगों पर प्रकाश डालिए। (12)

अथवा

संरचना के आधार पर वाक्य के भेद लिखिए।

5. किन्हीं **चार** शब्दों के शुद्ध रूप लिखिए- (2×6)

(क) रमायन, पर्याटन, हिरन, उज्जवल, लाँगूर, संपती, भगत, परलय ।

KALINDI COLLEGE LIBRARY

(ख) 'वाला' और 'कार' प्रत्यय से बनने वाले दो-दो शब्द लिखिए।

(ग) किन्हीं चार शब्दों का संधि-विच्छेद कीजिए-

अधोगति, दिगंबर, हिमालय, रवींद्र, विद्यालय, सप्तर्षि, महात्मा अनुच्छेद,

(घ) किन्हीं चार का विग्रह करके समास का नाम लिखिए-

तिराहा, रसोईघर, पनचक्की, नीलांबर, गजानन, राजपुत्र यथाशक्ति राजपुत्र

(ङ) किन्हीं चार का रूप परिवर्तन करके भाववाचक संज्ञा बनाइए-

बच्चा, मुस्कान,नीच, महान, मित्र, मीठा, बूढ़ा, सुंदर

(च) निम्नलिखित वाक्यों को शुद्ध करके लिखिए-

1. कोयल मीठा गाता है।
2. आपके एक एक शब्द प्रभावशाली होते हैं।
3. उसने संतोष का सांस ली।
4. मेरे को जाना है।

P.T.O.

KALINDI COLLEGE LIBRARY

6. टिप्पणी लिखिए- (8, 7)

(क) विराम चिह्न

अथवा

अव्यय (अविकारी शब्द)

(ग) पदक्रम और अन्विति

अथवा

प्रेरणार्थक क्रिया

(2000)

KALINDI COLLEGE LIBRARY

[This question paper contains 2 printed pages.]

Your Roll No..............

G

Sr. No. of Question Paper : 244

Unique Paper Code : 2052201101

Name of the Paper : Hindi Bhasha Aur Sahithya ka Itihas (DSC -1)

Name of the Course : **B.A. (Prog.) Hindi**

Semester : I

Duration : 3 Hours

Maximum Marks : 90

<u>छात्रों के लिए निर्देश</u>

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।

2. सभी प्रश्न अनिवार्य है।

1. हिंदी भाषा की विभिन्न बोलियों का वर्णन कीजिए।

अथवा

हिंदी साहित्य का काल विभाजन किन-किन आधारों पर किया गया है ? स्पष्ट कीजिए। (15)

P.T.O.

KALINDI COLLEGE LIBRARY

2. राम भक्ति काव्यधारा की प्रमुख प्रवृत्तियों का विश्लेषण कीजिए।

अथवा

'भक्तिआंदोलन के अखिल भारतीय स्वरूप का वर्णन कीजिए।

(15)

3. रीतिकाल को श्रृंगार काल क्यों कहा जाता है? स्पष्ट कीजिए।

अथवा

रीतिबद्ध काव्य की प्रमुख प्रवृत्तियों पर प्रकाश डालिए। (15)

4. द्विवेदी युगीन काव्य की प्रमुख विशेषताओं का वर्णन कीजिए।

अथवा

उपन्यास के उद्भव और विकास का विश्लेषण कीजिए। (15)

5. किन्हीं **तीन** पर टिप्पणी लिखिए : (10×3=30)

(i) अवधी भाषा

(ii) सूफी काव्य

(iii) छायावाद

(iv) संत काव्य

(v) प्रयोग वाद

(vi) कृष्णभक्ति काव्यधारा

(2000)

KALINDI COLLEGE LIBRARY

(10)

[This question paper contains 2 printed pages.]

Your Roll No. 23346216942

Sr. No. of Question Paper : 369 **G**

Unique Paper Code : 2052201101

Name of the Paper : Hindi Bhasha Aur Sahithya ka Itihas (DSC -1)

Name of the Course : **B.A. (Prog.) Hindi**

Semester : I

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 90

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए ।

2. सभी प्रश्न अनिवार्य है ।

1. हिंदी भाषा का उद्भव व विकास पर प्रकाश डालिए ।

अथवा

हिंदी साहित्य के आदिकाल की प्रमुख विशेषताओं को लिखिए । (15)

P.T.O.

KALINDI COLLEGE LIBRARY

2. भक्तिकाल की प्रमुख प्रवृतियों पर प्रकाश डालियें।

अथवा

संत काव्य का विस्तृत विवेचन कीजिए। (15)

3. रीतिकाल के नामकरण सम्बन्धी विभिन्न मतों का परिचय दिजिए।

अथवा

रीतिसिद्ध काव्य की प्रमुख प्रवृतियों को लिखिए। (15)

4. नई कविता की प्रमुख विशेषताओं का वर्णन कीजिए।

अथवा

नाटक के विकास में भारतेंदु युग की भूमिका का उल्लेख कीजिए। (15)

5. किन्ही **तीन** पर टिप्पणी लिखिए : (10×3=30)

(i) खड़ी बोली

(ii) ब्रज भाषा

(iii) आदिकालीन लौकिक साहित्य

(iv) रीतिबद्ध काव्य

(v) भारतेंदु युग

(vi) सूफी काव्य

(2000)

KALINDI COLLEGE LIBRARY